# आरती कीजै हनुमान लला की

Hanuman Aarti • आरती • देवनागरी

आरती कीजै हनुमान लला की।
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥

जाके बल से गिरिवर काँपे।
रोग दोष जाके निकट न झाँके॥

अंजनि पुत्र महा बलदाई।
संतन के प्रभु सदा सहाई॥

दे बीरा रघुनाथ पठाए।
लंका जारि सिया सुधि लाए॥

लंका सो कोट समुद्र सी खाई।
जात पवनसुत बार न लाई॥

लंका जारि असुर संहारे।
सियारामजी के काज सँवारे॥

लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे।
आनि संजीवन प्राण उबारे॥

पैठि पाताल तोरि जम कारे।
अहिरावण की भुजा उखारे॥

बाएँ भुजा असुर दल मारे।
दाहिने भुजा संतजन तारे॥

सुर नर मुनि आरती उतारें।
जय जय जय हनुमान उचारें॥

कंचन थार कपूर लौ छाई।
आरती करत अंजना माई॥

जो हनुमानजी की आरती गावै।
बसि बैकुंठ परम पद पावै॥

लंका विध्वंस किए रघुराई।
तुलसीदास स्वामी कीरति गाई॥

आरती कीजै हनुमान लला की।
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥

---

रचना / पाठ-परंपरा: पारंपरिक हनुमान आरती; प्रचलित पाठ पारंपरिक पाठ; वर्तनी और पाठांतर संभव हैं।